

डॉ. केविन ई. फ्रेडरिक, वाल्डेन्सियन, व्याख्यान 12, आर्म्ड टू द टीथ, हेनरी अर्नोल्ड, द ग्लोरियस रिटर्न, 1685 से 1690 © 2024 केविन फ्रेडरिक और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. केविन फ्रेडरिक वाल्डेन्सियन के इतिहास पर अपने शिक्षण में है। यह सत्र 12 है, आर्म्ड टू द टीथ, हेनरी अर्नोल्ड, द ग्लोरियस रिटर्न, 1685 से 1690।

धर्मोपदेश का शीर्षक आर्म्ड टू द टीथ है और यह शानदार वापसी की कहानी है, जिसे दुनिया भर के वाल्डेन्सियन समुदायों में मनाया जाता है जहाँ वाल्डेन्सियन समुदाय हैं।

हर साल अगस्त में। इसका नेतृत्व हेनरी अर्नोल्ड या हेनरी अर्नोल्ड नामक व्यक्ति द्वारा किया जाता था। हेनरी अर्नोल्ड एक मंत्री थे, इसलिए उनके नेतृत्व में अक्सर बहुत मजबूत आध्यात्मिक नेतृत्व के साथ-साथ सैन्य नेतृत्व भी शामिल होता था।

और इसलिए मैं आपके साथ एक भजन का अंश साझा करता हूँ जो उस समय लिखा गया था या वास्तव में पढ़ा गया था, जब वे अपनी आसन्न मृत्यु को देखने वाले थे। और यह भजन उन्हें पढ़कर सुनाया गया, और फिर इस भजन के आधार पर उन्हें उपदेश दिया गया। अगस्त 1689 से शुरू होकर मई 1690 में समाप्त होने वाले शानदार वापसी के हर दिन, अर्नोल्ड आध्यात्मिक ध्यान की भावना के साथ सेनानियों का नेतृत्व करेंगे।

वह उन्हें प्रार्थना और शास्त्रों में मार्गदर्शन करता था, दिन में एक बार उन्हें उपदेश देता था, जो किसी भी मंत्री के लिए एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। भजन 68 से, मैं श्लोक 1 से 6, 17 से 22, और 28 से 35 के अंश पढ़ रहा हूँ। परमेश्वर को ऊपर उठने दो।

उसके शत्रु तितर-बितर हो जाएँ। उसके बैरी उसके सामने से भाग जाएँ। जैसे धुआँ दूर भगाया जाता है, वैसे ही उन्हें भी भगा दे।

जैसे मोम आग के सामने पिघल जाता है, वैसे ही दुष्ट लोग परमेश्वर के सामने नाश हो जाएँ। परन्तु धर्मी लोग आनन्दित हों। वे परमेश्वर के सामने उल्लास मनाएँ।

वे खुशी से झूम उठें। भगवान के लिए गाएँ। भगवान के नाम पर स्तुति गाएँ।

जो बादलों पर सवार है, उसके लिए गीत गाओ। उसका नाम यहोवा है। उसके सामने मगन हो जाओ।

अनाथों का पिता और विधवाओं का रक्षक परमेश्वर अपने पवित्र निवास में है। परमेश्वर रहने के लिए उजाड़ घर देता है। वह कैदियों को समृद्धि की ओर ले जाता है, लेकिन विद्रोही एक सूखे देश में रहते हैं।

प्रभु ने शक्तिशाली रथों के साथ, जो दुगने दस हज़ार, हज़ारों की संख्या में थे, सिनाई से पवित्र स्थान पर आए। आप ऊँचे पहाड़ पर चढ़े, अपने दल में बंदियों को लेकर और लोगों से उपहार प्राप्त करते हुए, यहाँ तक कि उन लोगों से भी जो प्रभु परमेश्वर के वहाँ रहने के विरुद्ध विद्रोह करते हैं। धन्य है प्रभु जो हमें प्रतिदिन ऊपर उठाता है।

परमेश्वर हमारा उद्धार है। हमारा परमेश्वर उद्धार का परमेश्वर है, और परमेश्वर यहोवा को मृत्यु से मुक्ति मिलती है। परन्तु परमेश्वर अपने शत्रुओं के सिर, और उन लोगों के बालों वाले मुकुट को चूर-चूर कर देगा जो अपने पापी मार्गों पर चलते हैं।

यहोवा ने कहा कि मैं उन्हें बाशान से वापस ले आऊंगा। हे परमेश्वर, अपनी शक्ति को बुलाओ। हे परमेश्वर, अपनी शक्ति दिखाओ, जैसा तुमने पहले हमारे लिए किया था।

यरूशलेम के तेरे मन्दिर के कारण राजा तुझे भेंट चढ़ाते हैं। नरकटों में रहने वाले जंगली जानवरों को, और लोगों के बछड़ों के साथ बैलों के झुण्ड को डाँट। कर के लालची लोगों को पैरों तले रौंद डाल।

युद्ध में आनन्द लेने वाले लोगों को तितर-बितर कर दो। मिस्र के सामने पीतल लाया जाए। कूश को अपने हाथ परमेश्वर की ओर बढ़ाने में जल्दी करनी चाहिए।

हे पृथ्वी के राज्यों, परमेश्वर का भजन गाओ। हे स्वर्ग के लेखक, हे प्राचीन स्वर्ग, सुनो।

वह अपनी आवाज़, अपनी शक्तिशाली आवाज़ भेजता है। परमेश्वर को शक्ति दो, जिसका प्रताप इस्राएल पर है, जिसकी शक्ति आकाश में है। परमेश्वर अपने पवित्रस्थान में विस्मयकारी है, इस्राएल का परमेश्वर।

वह अपने लोगों को शक्ति और ताकत देता है। परमेश्वर धन्य है। यह प्रभु का वचन है।

भगवान का शुक्रिया। भगवान उठें और दुश्मन तितर-बितर हो जाएँ। 14 मई, 1690 की सुबह, लगभग आठ महीने की घेराबंदी के बाद, वाल्डेन्सियन लड़ाके अपने उपदेशक और सैन्य कमांडर हेनरी अर्नाल्ट को सुनने और दुश्मन सैनिकों पर अंतिम हमले के लिए खुद को मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से तैयार करने के लिए एकत्र हुए।

वाल्डेन्सियन की सुरक्षा पर कई दिनों तक तोपों से लगातार बमबारी की गई थी और दो सप्ताह की अवधि में, वाल्डेन्सियन को पहाड़ की ढलान पर उनकी अंतिम रक्षा पंक्ति तक वापस खदेड़ दिया गया था, जिसे पैन डे जुकारा, चीनी की रोटी, एक पहाड़ी के ऊपर एक चट्टान का उभार कहा जाता था जो एक रोटी के आकार का प्रतीत होता था। सभी जीवित 347 पुरुष जो उस सुबह की सुबह की रोशनी में पूजा करने के लिए एकत्र हुए थे, लगभग सभी प्रावधानों और गोला-बारूद से बाहर, अनुमान लगा रहे थे कि 14 मई, 1690, पृथ्वी पर उनका आखिरी दिन हो सकता है। उन्होंने उस सुबह यह जानने का भार उठाया कि यदि वे पराजित और नष्ट हो गए, तो उनकी

पत्नियाँ, बच्चे और अन्य वाल्डेन्सियन, सभी संभावनाओं में, अपने प्यारे वतन में फिर से बसने के लिए कभी वापस नहीं लौटेंगे।

मानवीय दृष्टिकोण से, सारी उम्मीदें खत्म हो गई थीं। वे उस भाग्यशाली सुबह अपने नेता हेनरी अर्नाल्ट और ईश्वर की ओर मुड़े, भजन 68 गाए, जिसे धन्यवाद और मुक्ति के भजन के रूप में जाना जाता है, ईश्वर की कृपा पर एक उपदेश सुना और उम्मीद और दुर्गम बाधाओं के बावजूद उम्मीद की कि वे इस घेराबंदी से बच जाएंगे। अर्नाल्ट ने एक बार फिर ईश्वर की ओर मुड़कर लड़ाकू बल के एक छोटे समूह के भीतर शक्ति, मार्गदर्शन और दिशा भरने की कोशिश की।

अरनॉल्ट का जन्म 1641 में लाटौर में हुआ था, जिसे बाद में टोरापेलाची कहा गया, और उन्होंने एक किशोर के रूप में विलियम ऑफ़ ऑरेंज की सेवा में एक सैनिक के रूप में शुरुआत की थी। अरनॉल्ट जल्द ही विलियम ऑफ़ ऑरेंज की सेना में कप्तान के पद तक पहुँच गए। अपने तीसवें दशक के उत्तरार्ध में, उन्होंने सेना छोड़ दी और एक पादरी के रूप में प्रशिक्षित हुए, और वे 1680 के दशक की शुरुआत में एक मण्डली की सेवा कर रहे थे।

फिर, 1685 में, फ्रांसीसी राजा, लुई XIV ने नैनटेस के आदेश को रद्द कर दिया, जो फ्रांस में ह्यूगनॉट प्रोटेस्टेंट को अपनी पसंद के अनुसार ईश्वर की पूजा करने का अधिकार देता था। लुई XIV ने एक राज्य के भीतर दो धर्मों को कमजोरी के संकेत के रूप में देखा। परिणामस्वरूप, 1685 में, लुई ने आस्था में एकीकृत राष्ट्र बनाने और फ्रांस में सभी प्रोटेस्टेंटों को पूरी तरह से खत्म करने का आदेश देने की मांग की।

कई हुगुएनोट्स को मौत के घाट उतार दिया गया। कई और लोगों को स्विट्जरलैंड और जर्मनी में निर्वासित कर दिया गया। अगले वर्ष, 1686 में, ड्यूक ऑफ़ सेवॉय और उनके सेवॉयर्ड सैनिकों के गठबंधन के साथ, लुई XIV ने अपने धार्मिक सफ़ाई अभियान का विस्तार करते हुए कोटियन आल्प्स के अल्पाइन क्षेत्र में वाल्डेन्सियन को भी शामिल कर लिया।

मई 1686 में कमांडर निकोलस कैटिनेट के नेतृत्व में, फ्रांसीसी सैनिकों ने वाल्डेन्सियन मातृभूमि को शुद्ध किया। कुल 14,000 वाल्डेन्सियन में से 8,500 पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को सैनिकों ने घेर लिया और कैद कर लिया। तीन दिनों की लड़ाई में 1,600 अतिरिक्त व्यक्ति मारे गए।

अन्य 2,000 लोग कैथोलिक धर्म में परिवर्तित हो गए, और कई सौ लोग निर्वासन में जिनेवा भाग गए, जिससे 1,000 से कम लड़ाकों का एक अपेक्षाकृत छोटा समूह रह गया, जिन्हें सहयोगी और दुश्मन दोनों ही अजेय के रूप में जानते थे। 8,500 लोगों में से जो कैद किए गए थे, उनमें से 60 प्रतिशत से अधिक लोग अगले आठ महीनों में भूख, प्यास और बीमारी से मर गए। 1686 के अंत में अजेय और लुई XIV के बीच, उनके सहयोगी ड्यूक ऑफ़ सेवॉय के साथ एक संधि पर सहमति हुई।

इनर्विसिबल्स ने जीवित कैदियों की रिहाई के बदले में स्विट्जरलैंड के लिए घाटियों को छोड़ने का वादा किया, जिन्हें स्विट्जरलैंड में निर्वासित भी किया जाएगा। सेवॉयर्ड सैनिकों की सुरक्षा में, 3,000 से अधिक कैदियों, जिनमें से अधिकांश घातक रूप से बीमार और दुर्बल थे, को केवल सर्दियों के मौसम में पैदल आल्प्स के ऊपर से जिनेवा तक की लंबी यात्रा करने के लिए उनकी

जेलों से रिहा किया गया था। यात्रा करने के लिए रिहा किए गए 3,000 से अधिक कैदियों में से 2,300 से भी कम लोग जीवित पहुँच पाए।

इसके विपरीत, 1685 के वसंत में कॉटियन आल्प्स में रहने वाले 14,000 वाल्डेन्सियन में से, एक साल से भी कम समय बाद केवल 3,381 ही जिनेवा में निर्वासित के रूप में जीवित बचे थे। और उन बचे हुए लोगों का जिनेवा के कैल्विनिस्ट नागरिकों द्वारा प्यार से स्वागत किया गया और उनकी देखभाल की गई। आगमन के एक महीने के भीतर, वाल्डेन्सियन नेताओं ने फ्रांसीसी सैनिकों से घाटी को वापस लेने की योजना बनाना शुरू कर दिया और यूरोप के आसपास के प्रोटेस्टेंट देशों से वित्तीय सहायता और सहायता मांगना शुरू कर दिया।

अगले दो वर्षों में वापस लौटने के दो असफल प्रयासों के बाद, 1689 की 16 और 17 अगस्त की रात को कार्रवाई करने का समय आया। हेनरी अर्नाल्ड, विलियम ऑफ़ ऑरेंज द्वारा नियुक्त, जो अब कर्नल के पद पर थे, ने वाल्डेन्सियन मातृभूमि को वापस लेने के लिए एक सैन्य अभियान को सुसज्जित करने के लिए इंग्लैंड और प्रोटेस्टेंट देशों से सफलतापूर्वक धन जुटाया था। अर्नाल्ड ने एल्पाइन पर्वतों पर 130 मील की यात्रा शुरू करने के लिए जिनेवा झील के तट पर 900 वाल्डेन्सियन और ह्यूगनॉट पुरुषों को इकट्ठा किया।

झील के किनारे के इलाके से निकलने से पहले ही उनके 200 से ज़्यादा लोगों और उनके मुख्य सैन्य कमांडरों को कैथोलिक नागरिक अधिकारियों ने पकड़ लिया। उन्हें कैद कर लिया गया और बाद में मार दिया गया। लगभग 700 लोगों ने कई पर्वत श्रृंखलाओं पर दक्षिण की ओर कठिन मार्च शुरू किया और शुरू में उन्हें न्यूनतम प्रतिरोध का सामना करना पड़ा।

लेकिन कभी-कभी उनके आंदोलन की खबर उनके आगे फैल जाती थी, और स्थानीय कैथोलिक अधिकारियों द्वारा उनके मार्च को विलंबित करने के लिए घात लगाने और प्रयास अधिकाधिक होते जा रहे थे। घर के आधे रास्ते में, उन्हें सबसे अधिक प्रतिरोध का सामना करना पड़ा, जिसमें सैलबर्ट्रोन के पुल पर 2,500 फ्रांसीसी सैनिकों की भारी फ़ौज थी। बंदूकों की भीषण आग के नीचे, अर्नाल्ड ने कई दर्जन लोगों को खो दिया।

हालाँकि वाल्डेन्सियन लड़ाकों ने फ्रांसीसी सैनिकों को बहुत ज़्यादा नुकसान पहुँचाया और पुल की रक्षा करने वाले उनके सैनिकों को खदेड़ दिया, लेकिन घर वापस जाते समय, अर्नाल्ड ने अपने कई दर्जन सैनिकों को खो दिया, जो उनके मजबूर मार्च की निरंतर गति के साथ तालमेल नहीं रख पाए। और जब वे वाल्डेन्सियन घाटियों में दाखिल हुए, तो उनकी लड़ाकू सेना अब 600 सैनिकों तक सिमट गई थी।

जिनेवा से निकलने के मात्र 11 दिन बाद, तेज़ बारिश और बर्फ़ से लदे पहाड़ों की चोटियों से गुज़रने के बाद, वाल्डेन्सियन लड़ाके अपनी घाटियों में वापस आ गए थे। रास्ते में अक्सर, जब तक फ्रांसीसी सैनिकों को किसी खास जगह पर उनकी मौजूदगी के बारे में पता चलता, वाल्डेन्सियन सैनिक फ्रांसीसी सैनिकों से पहले ही आगे निकल चुके होते थे, इससे पहले कि वे कोई विश्वसनीय हमला कर पाते। अर्नाल्ड की सेना की गति उनकी सबसे मज़बूत रणनीति में से एक थी, जिसने उन्हें अपने वतन वापस लौटने में सफल बनाया।

ल्यूसर्न घाटी के हृदय स्थल पर वापस आने पर, फ्रांस के 200 हुगुएनोट्स जो जिनेवा छोड़ने के बाद से वाल्डेन्सियन के साथ लड़े थे, अलग हो गए और फ्रांस के डौफिन क्षेत्र में अपने वतन लौट आए। दुखद रूप से, लड़ाकों के इस समूह को बाद में फ्रांसीसी सेना ने पकड़ लिया। एक व्यक्ति के लिए, उन्हें या तो मार दिया गया या फ्रांसीसी जहाजों में गैली दास के रूप में सेवा करने के लिए मजबूर किया गया।

सितंबर के अंत तक, एक बेहतरीन फ्रांसीसी सैन्य कमांडर जनरल निकोलस कैटिनेट के नेतृत्व में 10,000 फ्रांसीसी सैनिकों की एक सेना द्वारा पीछा किए जाने के बाद, अरनॉल्ट की लड़ाकू सेना में अब लगभग 400 लोग थे। स्वाभाविक रूप से रक्षात्मक स्थिति की आवश्यकता होने पर, अरनॉल्ट ने अपने लोगों के साथ शानदार वाल्डेन्सियन सैन्य रणनीतिकार जॉन एवेल की सिफारिश पर चर्चा की, जो जॉन एवेल के निर्वासन में रहने के दौरान जिनेवा में उनसे की गई थी। जॉन एवेल का मानना था कि जर्मनोस्का घाटी में बेसिलिया नामक स्थान उनके मातृभूमि की सीमाओं के भीतर पाया जाने वाला सबसे सुरक्षित प्राकृतिक गढ़ था।

पुरुषों ने सर्वसम्मति से सहमति व्यक्त की, और अक्टूबर के तीसरे सप्ताह तक, वे बेसिलिया पहुँच गए और पहाड़ पर आश्रय और सुरक्षा का निर्माण शुरू कर दिया। अरनॉल्ट ने निर्जन गाँवों से खाद्य आपूर्ति प्राप्त करने के लिए पुरुषों की टुकड़ियाँ भेजीं और जीवित रहने के लिए क्षेत्र में कैथोलिक बसने वालों से भिड़ गए। 1689 की शरद ऋतु के दौरान, कैटिनेट ने 10,000 फ्रांसीसी सैनिकों की अपनी भारी सेना के साथ वाल्डेन्सियन के गढ़ पर बार-बार हमला किया, लेकिन वाल्डेन्सियन ने गोलियों और पत्थरों और अप्रत्याशित गुरिल्ला रणनीति के साथ खुद का बचाव किया जब तक कि देर से शरद ऋतु की बर्फबारी शुरू नहीं हो गई।

अक्टूबर के अंत में फ्रांसीसी लगभग 40 किलोमीटर दूर पिनारोला में शीतकालीन क्वार्टर में चले गए। जिनेवा में निष्कासन से पहले इस क्षेत्र में रहने वाले कुछ वाल्डेन्सियन ने अरनॉल्ट को एक चक्की के पत्थर के बारे में बताया जिसे पास की एक चक्की से हटा दिया गया था और कैथोलिक हाथों से सुरक्षित रखने के लिए रेत में दफना दिया गया था। पुरुषों की एक छोटी टीम ने चक्की के पत्थर को खोदा और जल्द ही इसे चक्की में अपनी परिचालन स्थिति में वापस कर दिया, जिससे लड़ाकों को छोड़े गए गाँवों से इकट्ठा किए गए अनाज से आटा बनाने का साधन मिल गया।

इस दौरान, वाल्डेन्सियन लोग किसी भी अनाज और जड़ी-बूटी के आहार पर जीवित रहे, जो वे इकट्ठा कर सकते थे, लेकिन फरवरी के मध्य तक, उनके लगभग सभी खाद्य पदार्थ समाप्त हो गए थे। लगभग इसी समय, एक गर्म चिराको हवा ने अल्पाइन घाटियों में बर्फ को पिघला दिया और उसके नीचे मकई, राई और जई के बिना काटे हुए खेत दिखाई दिए, जो महीनों पहले से वहाँ पड़े थे। जब उन्हें इसकी सबसे अधिक आवश्यकता थी, तो उन्हें चमत्कारिक रूप से घेराबंदी के दौरान पर्याप्त अनाज की आपूर्ति की गई।

अप्रैल 1690 के अंत तक, 10,000 फ्रांसीसी सैनिकों ने पिनारोला में अपना शीतकालीन शिविर तोड़ दिया और अंतिम हमले के लिए बेसिलिया वापस चले गए। सर्दियों के महीनों के दौरान, लुई XIV ने ड्यूक ऑफ सेवॉय को अभियान के लिए अतिरिक्त 12,000 सेवॉयर्ड सैनिकों की आपूर्ति करने के लिए राजी कर लिया था, और वाल्डेन्सियन प्रतिरोध के खिलाफ जीत फ्रांसीसी द्वारा

सुनिश्चित की गई थी। क्षेत्र में वसंत की वापसी के साथ, 22,000 सैनिकों को ले क्रात्रे डेंट्स के नीचे घाटी में इकट्ठा किया गया था, जो कि चार दांत हैं, 400 से कम वाल्डेन्सियन पुरुषों के अवशेषों को हराने के लिए।

जब मैं कई साल पहले वहाँ गया था, तो मैं तस्वीरें लेने में सक्षम था, और हाँ, वहाँ के पहाड़ एक के बाद एक चार दाँतों की तरह दिखते थे, और यहीं से उनका नाम और उपदेश का शीर्षक आता है। 30 अप्रैल को, कैटिनेट ने वाल्डेन्सियन पर सीधा हमला करने के लिए अपने 4,000 सर्वश्रेष्ठ सैनिकों का चयन किया। दो रेजिमेंटों को बेसिलिया के ऊपर ऊँचे पहाड़ों पर भेजा गया था, लेकिन वहाँ बर्फ कई फीट गहरी थी, और सैनिकों को इन ऊँची चोटियों तक पहुँचने में मुश्किल हो रही थी, जिसके कारण अधिकांश सैनिकों को कठोर मौसम की स्थिति के कारण ठंड और ठंड लगना पड़ा।

2 मई को दोपहर के मध्य तक, फ्रांसीसी और सर्वॉयर्ड सैनिकों द्वारा वाल्डेन्सियन रक्षकों के खिलाफ एक खराब समन्वित हमला किया गया, लगभग उसी समय जब एक तेज़ बर्फ़ीला तूफ़ान ऊँची चोटियों से टकराया। हमलावर स्तंभों को वाल्डेन्सियन रक्षकों द्वारा पूरी तरह से खदेड़ दिया गया और बर्फ़ीले तूफ़ान में जवाबी हमले द्वारा उन्हें खदेड़ दिया गया। एक भी वाल्डेन्सियन रक्षक को खोए बिना सैकड़ों फ्रांसीसी और सर्वॉयर्ड सैनिक मारे गए।

कैटिनेट और उनके कमांडर ने अगले दस दिन अंतिम हमले की योजना बनाने में बिताए और तब तक इंतजार किया जब तक कि निचले इलाकों में अधिकांश बर्फ वसंत की धूप में पिघल नहीं गई। तोपखाने लाए गए थे, और तोपों ने वाल्डेन्सियनों की सुरक्षा पर बमबारी की, जिससे वे पहाड़ पर वापस अपने अंतिम किले, पैन डि सूक्रे में चले गए। 14 मई तक, शेष 347 वाल्डेन्सियन पूरी तरह से घिर गए थे, उनके सामने और किनारों पर नीचे घाटी में तीन रेजिमेंट और वाल्डेन्सियन रक्षा लाइनों के ऊपर और पीछे ऊँची अल्पाइन लकीरों में खुद को तैनात करने वाली दो रेजिमेंट थीं।

खच्चर से चलने वाली गाड़ियों की टीमों, जिनमें से प्रत्येक पर पोर्टेबल फाँसी का फंदा लगा हुआ था, वाल्डेन्सियन लड़ाकों की अपरिहार्य हार और पकड़े जाने की प्रतीक्षा कर रही थीं। जो भी बचे उन्हें फाँसी दी जानी थी, और उनके शवों को टोरिनो लौटने पर कस्बों और शहरों की सड़कों पर परेड करवाना था। अरनॉड और कैटिनेट दोनों अच्छी तरह से जानते थे कि अगले दिन वाल्डेन्सियन प्रतिरोध की हार होगी।

लेकिन उस शाम, पहाड़ों पर घना कोहरा छा गया और जब वाल्डेन्सियन अपनी संभावित रणनीतियों पर चर्चा कर रहे थे, कैप्टन फिलिप ट्रान पोलाट, जो इन पहाड़ों में खेलते और शिकार करते हुए बड़े हुए थे, ने अपने किले से नीचे सबसे कम पारगम्य मार्ग से भागने की योजना का सुझाव दिया, क्योंकि उन्हें लगा कि यह आसपास की सेनाओं में से सबसे कम गश्त वाला मार्ग था। वाल्डेन्सियन ने अपने कैंपफ़ायर जला दिए ताकि फ्रांसीसी सोचें कि वे अभी भी वहाँ हैं। इस बीच, पोलाट ने घने कोहरे के बीच अपने आदमियों के समूह का नेतृत्व किया, अक्सर अच्छी तरह से संरक्षित फ्रांसीसी लाइनों के माध्यम से खाई पर हाथों और घुटनों के बल रेंगने का सहारा लिया।

भागने के दौरान एक बार वाल्डेन्सियनों में से एक, जिसे अचानक खुद को संभालने के लिए अपने दोनों हाथों का इस्तेमाल करना पड़ा, अनजाने में उसके हाथ से एक धातु की केतली गिर गई, और वह पहाड़ की ढलान से नीचे गिर गई। लोगों का छोटा समूह अपनी जगह पर ही रुक गया और उसने कोहरे में एक फ्रांसीसी संतरी को पुकारते हुए सुना, क्या वेवे ? कौन है? लेकिन फिर कोई जवाब नहीं आया, और संतरी ने शोर को बंद कर दिया, और वाल्डेन्सियन, अपने दिलों को गले में दबाए हुए, घने कोहरे की आड़ में खड़ी चट्टानों से नीचे उतरने के लिए आगे बढ़े।

सुबह होते-होते पूरी वाल्डेन्सियन सेना को उनके किले से आधे दिन की दूरी पर एक पहाड़ी पर देखा गया। गंभीर रूप से घायल हुए कुछ लोगों को छोड़कर बाकी सभी बच गए थे। कैटिनेट और उनकी सेना को एक बार फिर वह जीत नहीं मिली जो उन्हें लग रही थी कि उनके हाथ में है, और फ्रांसीसी सेना ने अगले कुछ हफ्तों तक उनका पीछा किया, ताकि वाल्डेन्सियन समस्याओं का अंतिम समाधान उनके संपूर्ण विनाश से निकाला जा सके।

हालांकि, वाल्डेन्सियन बलों के बचाव में एक अंतिम कारक ने भूमिका निभाई। इंग्लैंड, नीदरलैंड और ऑस्ट्रिया के प्रोटेस्टेंट राष्ट्रों के साथ महीनों की निजी बातचीत के बाद, ड्यूक ऑफ सेवॉय ने फ्रांस के सहयोगी होने से अपनी निष्ठा बदल ली और अप्रत्याशित रूप से प्रोटेस्टेंट राष्ट्रों के साथ सेना में शामिल हो गए, ताकि पूरे यूरोप में सबसे शक्तिशाली सम्राट, लुई XIV को नियंत्रित किया जा सके। ड्यूक ने वाल्डेन्सियन से मिलने के लिए दूत भेजे थे और उनसे वादा किया था कि अगर वे फ्रांसीसी को हराने में मदद करने के उनके प्रयासों में एकजुट होंगे तो उन्हें स्वतंत्रता मिलेगी।

वाल्डेन्सियन ने एक बार फिर ड्यूक ऑफ सेवॉय को अपनी पूर्ण निष्ठा देने में संकोच नहीं किया और अगले कई वर्षों में, ड्यूक को फ्रांसीसी लोगों को उसके राज्य से मुक्त कराने में बहुत मदद की। जब सब कुछ कहा और किया गया, तो न केवल लड़ाकू लोगों का एक छोटा समूह अपनी घाटियों में शानदार वापसी से बच गया था, बल्कि वे आठ महीने तक कठोर सर्दियों के बीच पहाड़ की चोटी पर खोदे जाने से भी बच गए थे, जो उन्हें सुनसान घरों और गांवों से मिले खाद्य पदार्थों पर मिल रहे थे। न केवल वे एक बहुत ही बेहतर और कहीं बेहतर ढंग से सुसज्जित सेना के बार-बार हमलों से बच गए थे, बल्कि जब सारी उम्मीदें खत्म हो गई थीं, तो वे दो बेहतर सेनाओं के अपरिहार्य चंगुल से सफलतापूर्वक बच गए थे, जिनकी संख्या उनसे पचास से एक से अधिक थी और जिन्होंने उन्हें पूरी तरह से घेर लिया था।

अर्नोल्ड ने अपने पाठकों से अपने शानदार रिटर्न में अपने स्वयं के हस्तलेख में पूछा, वे कहते हैं: भगवान के हाथ के अलावा और कैसे इसे समझाया जा सकता है? यह सबसे उल्लेखनीय था कि बेसिलिया के आसपास की घाटियों के अनाज 1689 में बढ़ते मौसम के दौरान बिना काटे गए थे और केवल 1690 के फरवरी से अप्रैल तक कटाई के लिए खोजे गए थे। हेनरी अर्नोल्ड, जिन्होंने सुबह और शाम और पूरे अभियान के दौरान अपने लोगों को हर दिन अपने पादरी के रूप में भक्तिपूर्ण प्रार्थना के साथ नेतृत्व किया, उन्होंने अपने लोगों को हर हफ्ते कई बार उपदेश दिया, वर्षों बाद अपने संस्मरणों का निर्माण करते हुए ब्रासीलिया की घेराबंदी पर वापस प्रतिबिंबित किया। उन्होंने पूछा, क्या कोई इस असाधारण परिस्थिति में प्रोविडेंस के हाथ को पहचानने से इनकार कर सकता है कि वाडोई को गर्मियों के बीच में नहीं बल्कि सर्दियों के बीच में अपनी

फसल काटने की अनुमति थी? और हम आज सुबह भजन 68 के पहले शब्दों के साथ जवाब देते हैं, जिसे इन लोगों ने गाया था जब उम्मीद की सारी झलक खो गई थी, भगवान उठें और उनके दुश्मन बिखर जाएँ।

फिर से, अरनॉल्ट पूछता है, क्या भगवान के अलावा कोई भी ऐसे मुट्ठी भर लोगों को, जो सोने और चांदी से वंचित हैं, सभी अन्य सांसारिक सहायता से वंचित हैं, एक ऐसे राजा के खिलाफ युद्ध करने का साहस दे सकता है जिसने उस समय पूरे यूरोप को कांपने पर मजबूर कर दिया था? भगवान को उठने दो, और उसके दुश्मन बिखर जाएँ। अरनॉल्ट आगे कहते हैं, क्या यह कल्पना करना संभव है कि बिना किसी पूर्णतः दैवीय सुरक्षा के ये बेचारे लोग, जो लगभग मृतकों की तरह धरती में पड़े थे और आठ महीने की नाकाबंदी के बाद पुआल पर सो रहे थे, आखिरकार जीत सकते थे? भगवान को उठने दो और उसके दुश्मन बिखर जाएँ। अरनॉल्ट उन पहाड़ों में मौसम की घटनाओं में भगवान के दैवीय हाथ को भी दर्शाता है, जिसमें 2 मई का बर्फ़ीला तूफान, फ्रांसीसी और सर्वॉयर्ड सैनिकों द्वारा समन्वित घटना के दिन हमला,

भगवान उठ खड़े हों और उनके दुश्मन तितर-बितर हो जाएँ। क्या ऐसा नहीं लगता कि भगवान ने आठ महीनों तक धरती पर अनाज को सुरक्षित रखने के लिए कहा था, ताकि सर्दियों और घेराबंदी की कठिनाइयों के दौरान इन सताए गए लोगों को भोजन मिल सके? ये मेरे सच्चे बच्चे हैं, मेरे चुने हुए और प्यारे, जिन्हें मेरी कृपा से खेलाना मेरा सौभाग्य है। उनकी कनान की भूमि, जहाँ मैं उन्हें वापस लाया हूँ, उन्हें फिर से देखकर खुश हो और उन्हें एक असामान्य और लगभग अलौकिक उपहार बना दे।

अरनॉल्ट ने निष्कर्ष निकाला, भगवान को ऊपर उठने दो और उसके दुश्मनों को तितर-बितर कर दो। और मैं यह भी जोड़ सकता हूँ कि हम इन बार-बार की सैन्य सफलताओं और धीरज की व्याख्या कैसे करें, जब अक्सर 10 से 50 से अधिक की संख्या में कहीं भी कम होते हैं? लगातार वाल्डेन्सियन ने यूरोप में अपने समय की सबसे शक्तिशाली सेना के प्रशिक्षित और अनुशासित सैनिकों के खिलाफ कई बार जीत हासिल की। अगस्त 1689 में शुरू हुए और जून 1690 तक जारी रहे सैन्य अभियान के दौरान फ्रांसीसी सेना की हताहतों की सूची अक्सर 100 से 1 से अधिक थी।

भगवान को उठना चाहिए और उसके दुश्मनों को तितर-बितर कर देना चाहिए। इन तथ्यों को जानने का मतलब यह नहीं था कि वाल्डेन्सियनों के लिए घेराबंदी के दौरान सब कुछ आसान था, न ही इसका मतलब यह था कि वे निराशा से संघर्ष नहीं कर रहे थे, लेकिन इसका मतलब यह था कि एक राष्ट्र के रूप में वे एक ऐसे दुश्मन के हाथों मृत्यु की अनिवार्यता से बच जाएंगे जो दांतों से लैस था। समापन में, मैं फिर से खुद अरनॉल्ट के शब्दों को उद्धृत करता हूँ, निश्चित रूप से यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि उनकी सभी परेशानियों और खतरों में सर्वशक्तिमान ने उन्हें बचाया, उन्हें उनकी सभी लड़ाइयों में जीत दिलाई, जब वे कमजोर दिल थे, तो उनका समर्थन किया, जब उन्हें लगा कि वे निराश्रित होंगे, तो उन्हें आवश्यक चीजें प्रदान कीं और अंत में उनके राजकुमार, ड्यूक को उनकी विरासत में उन्हें फिर से स्थापित करने और उन्हें अपने चर्चों के प्रति सच्ची भक्ति बहाल करने की इच्छा से प्रेरित किया।

ऐसी आश्चर्यजनक घटनाओं ने साबित कर दिया कि फ्रांसीसी और पीडमोंट की सेनाओं को केवल रोम के छलपूर्ण आशीर्वाद से सहायता मिली, जो पृथ्वी पर ईश्वर होगा, जबकि वेदोई की सेनाओं को महान ईश्वर द्वारा आशीर्वाद दिया गया था जो राजाओं का राजा है और अपने राजदंड को किसी सांसारिक हाथों में नहीं सौंपता है। तो फिर उस शाश्वत को धन्यवाद, जिसने वेदोई को ऐसे चमत्कारों के साधन के रूप में चुनकर, उनके धर्म को इस तरह से मंजूरी दी है कि जिसमें सभी छुड़ाए गए लोग उसकी सेवा करेंगे, उसका सम्मान करेंगे और उसका पालन करेंगे। आमीन और आमीन।

यह डॉ. केविन फ्रेडरिक हैं जो वाल्डेन्सियन के इतिहास पर अपना अध्यापन दे रहे हैं। यह सत्र 12 है, आर्म्ड टू द टीथ, हेनरी अर्नोल्ड, द ग्लोरियस रिटर्न, 1685 से 1690।